Jay Ram Singh
Deptt. of Psychology
Mahila College Daltonganj

Paper V

Social Psychology

B.A III Part ...

Survey METHOD

सर्वेक्षण-विधि के गुण-दोष.

समाज मनोविज्ञान में विषय-वस्तु के अध्ययन के लिए अनेकों विधियों का उपयोग किया जाता है। जिसमें Survey Method एक आधुनिक तथा सबसे ज्यादा प्रचलित विधि है। इसमें व्यक्ति के प्रतिदर्शों से पूछ कर ही प्राप्त उत्तरों के आधार पर उसे सामान्यीकरण किया जाता है। इसलिए इसे प्रतिदर्श-सर्वेक्षण विधि भी कहा जाता है। इस विधि से प्राप्त निष्कर्षों को सिद्धांतों तथा नियमों के प्रतिपादन एवं व्याख्याओं के लिए उपयुक्त माना जाता है।

सर्वेक्षण Survey का हिन्दी रूपान्तर है जिसका निर्माण दो शब्दों के मेल से हुआ है SOR और VOR (Veeior)। SOR का अर्थ ऊपर होता है तथा Veeior का अर्थ देखना होता है। इस प्रकार Survey का अर्थ देखना या निरीक्षण करना होता है। जिसका व्यवहार समाज मनोविज्ञान में अधिक ही साधारण अर्थों में सर्वेक्षण विधि उसे कहा जाता है जिसके द्वारा प्रश्नावली, निरीक्षण एवं साक्षात्कार आदि के माध्यम उपकरणों की सहायता से व्यक्तियों या वस्तुओं की विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है।

सर्वेक्षण विधि के अर्थ को स्पष्ट करते हुए . जि. कलिंगर ने कहा है कि— सर्वेक्षण अनुसंधान समाज वैज्ञानिक खोज की वह शाखा है जो समाज शास्त्रियों एवं मनोवैज्ञा० चरों की सापेक्ष घटना, आवंटन एवं पारस्परिक सम्बन्धों की जानकारी प्राप्त करने के लिए समग्र से चुने हुए प्रतिदर्शों के चुनाव एवं अध्ययन द्वारा बड़ी एवं छोटी जनसंख्याओं का अध्ययन करता है।

Morrison ने Survey method के सम्बन्ध में कहा है कि "सर्वेक्षण शोध का सम्बन्ध वस्तु एवं व्यक्तियों के ऐसी विशेषताओं के अध्ययन से है जो अध्ययन की जाने वाली विशिष्ट परिस्थिति से प्रभावित नहीं होती है। सिंह एवं [illegible] 1985 ने सर्वेक्षण के सम्बन्ध में कहा है कि सर्वेक्षण विधि एक ऐसी विधि है जिसमें व्यक्तियों के प्रतिनिधिक समूह से उनके व्यवहार मनोवृत्ति या विश्वास के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न पूछे जाते हैं।

सर्वेक्षण विधि के उपरोक्त वर्णित विचारों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि यह एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा किसी विशेष समुदाय या घटना से सम्बन्धित लोगों के मनोवृत्ति उनके भावों तथा व्यवहारों की जानकारी प्राप्त

जाती है। इस विधि की एक मुख्य विशेषता यह है कि इसमें प्रतिदर्शों का अध्ययन किया जाता है तो यह विश्वास कर लिया जाता है कि प्रतिदर्शों से प्राप्त परिणाम पूरी जनसंख्या पर उसी रूप में लागू होते हैं।

सर्वेक्षण विधि के गुण दोष → सर्वेक्षण विधि सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन के लिए एक तरह सफल है इस संदर्भ में विभिन्न समाज मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रियों के विचारों के आलोक में इसके अनेक गुण हैं जो निम्नलिखित हैं

(1) विस्तृत क्षेत्र → सर्वेक्षण विधि का एक महत्वपूर्ण गुण यह है कि इसका क्षेत्र काफी विस्तृत होता है। इस विधि का व्यवहार जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में करना संभव है। इस सम्बन्ध में WORCHEL एवं Cooper 1929 ने इसके सम्बन्ध में कहा है कि सर्वेक्षण विधि का व्यवहार, समाज-मनोविज्ञान, समाजशास्त्र एवं अर्थशास्त्र, राजनीति अनेक क्षेत्रों में किया जाता है।

(2) समग्रता → सर्वेक्षण विधि में समग्रता का भी गुण पाया जाता है इस सम्बन्ध विद्वानों का कहना है कि यह एक ऐसी विधि है जिसके अन्तर्गत अनेकों उपकरणों का व्यवहार किया जाता है साक्षात्कार

प्रश्नावली, निरीक्षण, इत्यादि अनेक उपकरणो को यह विधि अपने अन्दर समाहित करे लेती है समग्रता का यह गुण दूसरे विधियों में नहीं पाया जाता है

(iii) सामाजिक कल्याण → समाज मनोविज्ञान के इस विधि के द्वारा सामाजिक कल्याण में काफि मदद मिलती है। सर्वेक्षण विधि के द्वारा सामाजिक कल्याण से सम्बन्धित जो सूचनायें प्राप्त की जाती है उसके आधार पर समाज में सामाजिक कल्याण की समुचित व्यवस्था में काफि सहायता ~~प्रदान होती~~ मिलती है

(iv) सरकारी योजना → सरकारी योजनाओं के निर्माण में भी इस विधि से काफि सहायता मिलती है जिस सर्वेक्षणों का उपयोग करके सरकार जनमत की जानकारी प्राप्त करके किसी भी योजना का निर्माण करती है जो ज्यादा सफल होता है।

(v) <u>लचीलापन</u> → सर्वेक्षण विधि में लचीलापन का गुण भी पाया जाता है

किलनगर ने <u>1964</u> ने लचीलापन के सम्बन्ध में कहा है कि सर्वेक्षण विधि एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा सामाजि समस्याओं के अध्ययन के लिए आवश्यकता परिणाम के अनुसार परिवर्तन लाना सं
है

(5)

सर्वेक्षण विधि के दोष — सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत प्रयोग के सामान्य उपरोक्त कुछ दोष भी हैं जो निम्नलिखित हैं

① आत्मनिरीक्षण → सर्वेक्षण विधि का एक प्रमुख दोष यह है कि यह एक आत्मनिरीक्षण विधि है इस विधि में कुछ मापक भी उत्तरदाता ईमानदारी नहीं रखती है कि प्रश्नावली का सही उत्तर दे और प्रयोज्य सही बात को छुपा लेता है और गलत सूचना दे देता है। अतः इस विधि के द्वारा जो निष्कर्ष प्राप्त होते हैं वो संदिग्ध भी होते हैं।

② सहसंबंधी विधि → इस विधि का एक प्रमुख दोष यह है कि इस विधि के द्वारा किसी विषय वस्तु के कारण-प्रभाव सम्बन्ध का ज्ञान अध्ययन संभव नहीं है। अतः इस विधि को वैज्ञानिक विधि नहीं कहा जा सकता है।

③ परिशुद्धता का अभाव — इस विधि में परिशुद्धता का अभाव पाया जाता है क्योंकि इस विधि में मापन में अशुद्धि पाया जाता है जिसके कारण इसकी परिशुद्धता समाप्त हो जाती है।

(6)

④ निम्न विश्वसनीयता → सर्वेक्षण विधि की विश्वसनीयता काफी सीमित होती है क्योंकि जब किसी समस्या का अध्ययन करने के लिए बार-बार इसका उपयोग किया जाता है तो उसके परिणामों में भिन्नता आने लगती है अतः इससे प्राप्त परिणाम की विश्वसनीयता निम्न होने की संभावना बढ़ जाती है

⑤ निम्न वैधता → इस विधि में वैधता से सम्बन्धित दोष भी पाये जाते है इस विधि की वैधता निम्न होती है इसलिए इसके आधार पर जो परिणाम प्राप्त होते है उसके आलोक में किसी भी तरह का भविष्यवाणी करना संभव नहीं है

सर्वेक्षण विधि के वर्णित उपरोक्त गुणों एवं दोषों के आधार पर हम निष्कर्ष के रूप में कह सकते है कि इस विधि में अनेक गुण है और कुछ दोष भी है लेकिन इन दोषों को रहते हुए भी इसका उपयोग बड़े पैमाने पर सामाजिक समस्याएं के समाधान के लिए किया जाता है